E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति: एक विस्तृतअध्ययन

[1]आराधना धुर्वे

[1]सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग),शासकीय कला एवं वाणिज्य (नवीन) महाविद्यालय, जहांगीराबाद, भोपाल, म.प्र.

[2]डॉ. अनिल दुबे

[2]शोध निर्देशक,प्राध्यापक इतिहास विभाग,शासकीय हमीदिया कला एवं

वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल म.प्र.

Paper Rcevied date

05/04/2025

Paper date Publishing Date

10/04/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15249430

IMPACT FACTOR

5.924

ABSTRACT

गोंड जनजाति, भारत के सबसे बड़े और सबसे प्रमुख स्वदेशी समुदायों में से एक है, जिसकी मध्य प्रदेश में मजबूत उपस्थिति है। शहरी प्रवास और जन संचार ने गोंड पहचान को नया रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे सामाजिक गतिशीलता और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में चुनौतियों दोनों के अवसर पैदा हुए हैं। सरकारी हस्तक्षेपों ने औसत दर्जे की प्रगति की है, लेकिन अधिक समावेशी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता है। आधुनिकीकरण ने शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार तक पहुंच में सुधार किया है, लेकिन इसने पारंपरिक अनुष्ठानों, भाषाओं और सामाजिक संरचनाओं के क्षरण सहित महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन भी किए हैं। यह शोध गोंड समुदाय की ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की पड़ताल करता है, आधुनिकीकरण, शिक्षा, सरकारी योजनाओं और आर्थिक सुधारों के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करता है। मध्य प्रदेश में गोंड समुदाय के लिए एक स्थायी और समावेशी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए आदिवासी पहचान के संरक्षण के साथ विकास को संतुलित करने के महत्व पर जोर देता है।

मुख्यशब्द- गोंड जनजाति, मध्य प्रदेश, सांस्कृतिक परिवर्तन, आदिवासी विकास, आधुनिकीकरण, स्वदेशी पहचान

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1. प्रस्तावना

गोंड जनजाति, भारत में सबसे बड़े और सबसे प्राचीन स्वदेशी समुदायों में से एक, मध्य भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और ओडिशा राज्यों में पाए जाने वाले, गोंडों ने सदियों से एक अलग सांस्कृतिक पहचान बनाए रखी है (ज़ाक्सा, 2001)। इन राज्यों में, मध्य प्रदेश में गोंडों की एक बड़ी आबादी है, विशेष रूप से मंडला, डिंडोरी, छिंदवाड़ा और बालाघाट जैसे जिलों में, जहां उन्होंने बदलते सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के बीच अपने अद्वितीय रीति-रिवाजों, मौखिक परंपराओं और सामुदायिक जीवन को संरक्षित किया है। सांस्कृतिक रूप से, गोंड अपने जीवंत लोकगीतों, एनिमिस्टिक आध्यात्मिक विश्वासों, विस्तृत अनुष्ठानों और गोंड पेंटिंग जैसे अभिव्यंजक कला रूपों के लिए जाने जाते हैं। उनकी धार्मिक प्रणाली पारंपरिक रूप से प्रकृति पूजा, पूर्वजों की आत्माओं और कबीले देवताओं के इर्द-गिर्द घूमती है, हालांकि हाल के दशकों में, मुख्यधारा की हिंदू प्रथाओं (शाह, 2010) में आत्मसात हो रही है। गोंडी, जनजाति की भाषा, जो द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित है, लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है; हालांकि, शिक्षा और प्रशासन में हिंदी के बढ़ते प्रभुत्व के कारण इसका उपयोग घट रहा है (अब्बी, 2006)।

गोंड जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, खासकर भारत की स्वतंत्रता के बाद। संविधान की पांचवीं अनुसूची, आरक्षण नीतियों और लक्षित विकास कार्यक्रमों जैसी सरकारी पहलों का उद्देश्य आदिवासी कल्याण में सुधार करना है। इन उपायों के बावजूद, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, भूमि अधिकार और रोजगार के क्षेत्रों में चुनौतियां बनी हुई हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) की रिपोर्ट है कि गोंडों सहित आदिवासी समुदायों को साक्षरता, आय और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच (एनएसएसओ, 2011) में असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। औपचारिक शिक्षा, जन संचार, शहरीकरण और बाजार एकीकरण के प्रसार की विशेषता वाले आधुनिकीकरण का गोंड समुदाय पर दोहरा प्रभाव पड़ा है। जबकि इसने ऊपर की गतिशीलता, रोजगार और सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता के लिए अवसर प्रदान किए हैं, इसने सांस्कृतिक

विघटन, विस्थापन और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को कमजोर करने का भी नेतृत्व किया है (बेतेले, 1998) । रोजगार के लिए शहरी केंद्रों में प्रवास के परिणामस्वरूप विस्तारित परिवार इकाइयों का विखंडन हुआ है और पैतृक भूमि और प्रथाओं से अलगाव हुआ है। इसलिए, यह अध्ययन जनसंचार, शिक्षा और आर्थिक सुधारों की भूमिका की खोज करके मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति के भीतर सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण करना चाहता है। यह आगे सामाजिक रीति-रिवाजों, धार्मिक प्रथाओं और आर्थिक संरचनाओं में बदलाव की जांच करता है, विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच तनाव पर ध्यान आकर्षित करता है। एक बहु-विषयक लेंस और क्षेत्र सर्वेक्षण, माध्यमिक डेटा और सांस्कृतिक विश्लेषण के संयोजन के माध्यम से, अनुसंधान का उद्देश्य तेजी से परिवर्तन की स्थिति में गोंड समुदाय की लचीलापन और भेद्यता दोनों को उजागर करना है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

गोंड, भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रमुख आदिवासी समुदायों में से एक, अपनी उत्पत्ति पूर्व-आर्यन काल में खोजते हैं, विद्वानों ने उन्हें प्राचीन द्रविड़ स्टॉक (ज़ाक्सा, 2008) से जोड़ा है। माना जाता है कि "गोंड" शब्द कोंड शब्द से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ द्रविड़ भाषा में "हरा पहाड़" है, जो मध्य भारत के घने जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में उनके लंबे समय से निवास का प्रतीक है (वर्मा, 2021)। उनकी प्राथमिक बस्तियाँ गोंडवाना क्षेत्र के भीतर स्थित हैं, जिसमें ऐतिहासिक रूप से वर्तमान मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और ओडिशा के बड़े हिस्से शामिल थे। गोंडों को पारंपरिक रूप से कबीले-आधारित समाजों में संगठित किया गया था, जिसमें प्रकृति के साथ एक मजबूत संबंध था और प्रथागत कानून और आध्यात्मिक विश्वास प्रणालियों में निहित शासन का एक विकेन्द्रीकृत रूप था।

13 वीं और 18 वीं शताब्दी के बीच, गोंडों ने कई शक्तिशाली राज्यों की स्थापना की, जिनमें सबसे प्रमुख गढ़ा-मंडला, देवगढ़ और चंदा राजवंश थे। ये राजनीतिएँ वन संसाधनों और रणनीतिक व्यापार मार्गों पर अपने नियंत्रण के कारण फली-फूली (सिंह और शर्मा, 2020)। गोंड इतिहास में

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सबसे प्रसिद्ध शख्सियतों में गढ़ा-मंडला साम्राज्य की एक योद्धा रानी दुर्गावती हैं, जो 16 वीं शताब्दी के मध्य में सम्राट अकबर की सेना के नेतृत्व में मुगल आक्रमण के खिलाफ अपने प्रतिरोध के लिए प्रसिद्ध थीं। उनकी विरासत उनकी स्वायत्तता और सांस्कृतिक विरासत (मीना, 2019) की रक्षा में गोंड लचीलापन और वीरता का प्रतीक है। इन राजवंशों ने मंदिर निर्माण, स्थानीय शासन प्रणालियों और आदिवासी कला के संरक्षण के माध्यम से क्षेत्रीय संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो औपनिवेशिक और मुगल दबावों के तहत उनके क्रमिक पतन से पहले गोंड संप्रभुता के स्वर्ण युग को चिह्नित करता है।

3. सांस्कृतिक व्यवहार

मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति के पास सांस्कृतिक प्रथाओं का एक समृद्ध टेपेस्ट्री है जो सदियों की परंपरा और बाहरी प्रभावों से आकार लेता है। उनकी सामाजिक संरचना, भाषा, कला और धार्मिक विश्वास सामूहिक रूप से उनकी विशिष्ट पहचान में योगदान करते हैं (शर्मा, 2021)।

3.1 सामाजिक संरचना और परंपराएं

गोंड एक कबीले-आधारित सामाजिक संगठन को बनाए रखते हैं, जिसमें प्रत्येक कबीले विशिष्ट कुलदेवता से जुड़े होते हैं, जो अक्सर प्रकृति के तत्वों जैसे जानवरों, पौधों या खगोलीय पिंडों से प्राप्त होते हैं। ये कुलदेवता महत्वपूर्ण आध्यात्मिक महत्व रखते हैं और उनके सामाजिक संबंधों और रीति-रिवाजों के विभिन्न पहलुओं का मार्गदर्शन करते हैं। परंपरागत रूप से, विवाह समुदाय के भीतर व्यवस्थित किए जाते हैं, सख्त बहिर्विवाह नियमों का पालन करते हैं जो एक ही कबीले के भीतर संघों को प्रतिबंधित करते हैं, जिससे सामाजिक सामंजस्य और आनुवंशिक विविधता को बढ़ावा मिलता है (भारद्वाज, 2020)। गोंड समाज में महिलाएं एक सम्मानित स्थान रखती हैं, आर्थिक गतिविधियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, जो अपेक्षाकृत समतावादी सामाजिक ढांचे को दर्शाती हैं (वर्मा, 2019)।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3.2 भाषा और कला

गोंडी भाषा, द्रविड़ परिवार का हिस्सा, सीमित लिखित साहित्य के साथ मुख्य रूप से मौखिक है। इस मौखिक परंपरा में पीढ़ियों से चली आ रही लोककथाओं, गीतों और मिथकों का एक समृद्ध भंडार शामिल है। गोंड कला प्रकृति, जानवरों और देवताओं के जीवंत चित्रण के लिए प्रसिद्ध है, जिन्हें अक्सर दीवारों और फर्श पर प्राकृतिक रंजक का उपयोग करके बनाया जाता है। इस कला रूप ने अपने जटिल पैटर्न और कहानी कहने वाले तत्वों के लिए अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है, जो उनकी सांस्कृतिक विरासत के दृश्य आख्यान के रूप में कार्य कर रहा है (सिंह और पटेल, 2022)।

3.3 धार्मिक विश्वास

परंपरागत रूप से, गोंडों ने जीववाद का अभ्यास किया, प्राकृतिक तत्वों और पूर्वजों की पूजा की। वे जीवन के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करने वाले देवताओं के एक पंथ में विश्वास करते हैं और इन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान करते हैं। समय के साथ, हिंदू धर्म के प्रभावों ने हिंदू देवताओं को उनकी धार्मिक प्रथाओं में शामिल कर लिया है, जिसके परिणामस्वरूप एक समकालिक विश्वास प्रणाली है जो स्वदेशी और हिंदू तत्वों को मिश्रित करती है (कुमार, 2021)।

4. सामाजिक-आर्थिक स्थिति

गोंड समुदाय के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को उनकी पारंपरिक आजीविका, शैक्षिक गतिविधियों और स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे द्वारा आकार दिया गया है।

4.1 आजीविका

ऐतिहासिक रूप से, गोंड निर्वाह कृषि, शिकार और सभा में लगे हुए थे। उन्होंने बाजरा, चावल और मसूर जैसी फसलों की खेती की और जीविका और व्यापार के लिए वन उपज एकत्र की। हालांकि,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

वनों की कटाई और भूमि अतिक्रमण ने उनकी पारंपरिक आजीविका को बाधित कर दिया है, जिससे कई लोग शहरी क्षेत्रों में मजदूरी की तलाश कर रहे हैं (दास और मीना, 2020)।

तालिका 1: चयनित जिलों में गोंडों के प्राथमिक व्यवसाय (2021 सर्वेक्षण डेटा)

व्यवसाय का प्रकार	छिंदवाड़ा (%)	मंडला (%)	डिंडोरी (%)
पारंपरिक कृषि	35	42	48
व्यावसायिक खेती	22	18	15
मजदूरी श्रम (निर्माण)	25	20	18
वन आधारित आजीविका	8	12	14
सरकारी नौकरी	5	4	2
स्वरोजगार	5	4	3

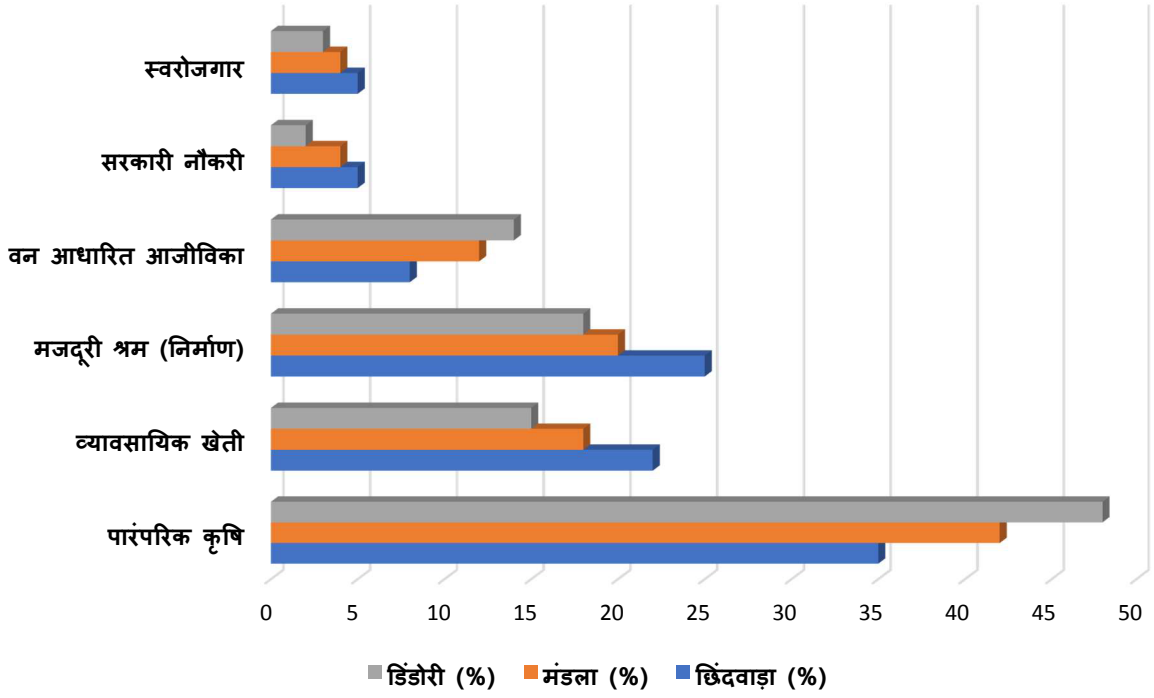

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4.2 शिक्षा और साक्षरता

भौगोलिक अलगाव और सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के कारण गोंडों के बीच शैक्षिक प्राप्ति पारंपरिक रूप से कम रही है। सरकारी पहलों ने शिक्षा तक पहुँच में सुधार किया है, लेकिन भाषा अवरोध और सांस्कृतिक अलगाव जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जो उच्च ड्रॉपआउट दर में योगदान करती हैं (जनजातीय कार्य मंत्रालय, 2022)।

तालिका 2: लिंग के आधार पर गोंड जनजाति के बीच शैक्षिक प्राप्ति (2021 डेटा)

शिक्षा का स्तर	पुरुष (%)	महिला (%)
कोई औपचारिक शिक्षा नहीं	40	50
प्राथमिक	30	28
माध्यमिक	20	15
उच्चतर माध्यमिक	7	5
स्नातक और ऊपर	3	2

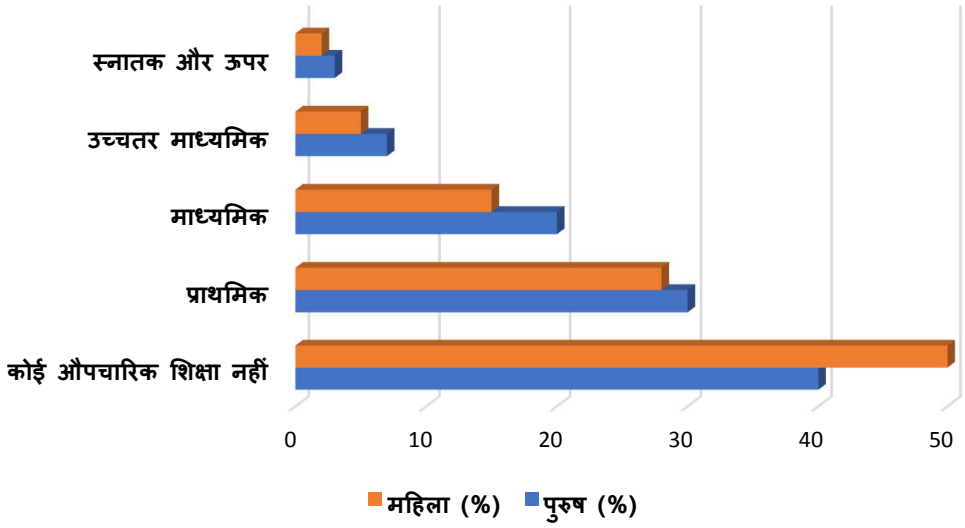

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4.3 स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचा

गोंडों को कुपोषण और स्वास्थ्य सुविधाओं तक सीमित पहुंच सहित महत्वपूर्ण स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आयुष्मान भारत जैसे सरकारी कार्यक्रमों का उद्देश्य इन मुद्दों का समाधान करना है, लेकिन दूरदराज के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की कमी प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालती है (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, 2023)।

5. आधुनिकीकरण का प्रभाव

आधुनिकीकरण ने गोंड समुदाय के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों लाए हैं, जिससे उनके सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य प्रभावित हुए हैं।

5.1 सांस्कृतिक क्षरण

मुख्यधारा के मीडिया और शहरी प्रवास के संपर्क में आने से गोंडों के बीच पारंपरिक प्रथाओं और भाषाओं की कमी आई है। युवा पीढ़ी तेजी से मुख्यधारा के सांस्कृतिक मानदंडों को अपना रही है, जिससे स्वदेशी पहचान का क्रमिक क्षरण हो रहा है (राव और तिवारी, 2022)।

5.2 आर्थिक बदलाव

एक निर्वाह अर्थव्यवस्था से व्यापक बाजार अर्थव्यवस्था में भागीदारी के लिए संक्रमण ने आय के नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन कमजोरियों को भी पेश किया है। नकदी फसलों और दिहाड़ी श्रम पर निर्भरता ने गोंडों को बाजार में उतार-चढ़ाव और शोषण के लिए अतिसंवेदनशील बना दिया है (इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 2023)।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. सरकारी पहल

मध्य प्रदेश सरकार ने आदिवासी कल्याण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं, जिसमें आदिवासी कला को बाजार में लाने और स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में सुधार के प्रयास शामिल हैं। हालाँकि इन पहलों की प्रभावशीलता अक्सर कार्यान्वयन की चुनौतियों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता की कमी (योजना आयोग की रिपोर्ट, 2022) से बाधित होती है।

7. सिफारिशें

सांस्कृतिक संरक्षण के साथ विकास को संतुलित करने के लिए, निम्नलिखित उपायों की सिफारिश की जाती है:

- सांस्कृतिक संरक्षण: गोंडी भाषा और परंपराओं के दस्तावेजीकरण और प्रचार के लिये समुदाय के नेतृत्व वाले कार्यक्रमों को लागू करना, भविष्य की पीढ़ियों तक उनका प्रसारण सुनिश्चित करना।
- शिक्षा: सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक पाठ्यक्रम विकसित करें जिसमें स्वदेशी ज्ञान शामिल हो और जुड़ाव और प्रतिधारण बढ़ाने के लिए गोंडी भाषा में वितरित किया जाए।
- आर्थिक सशक्तिकरण: पारंपरिक शिल्प को बढ़ावा देकर और शोषण को रोकने के लिए सीधे बाजार पहुंच की सुविधा प्रदान करके स्थायी आजीविका का समर्थन करना।
- स्वास्थ्य देखभाल पहुँच: आदिवासी क्षेत्रों के भीतर स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढाँचे में निवेश करना और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त सेवाएँ प्रदान करने के लिये स्थानीय स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित करना।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8. निष्कर्ष

मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है। जबकि आधुनिकीकरण अवसरों और चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करता है, विकास रणनीतियों को अपनाना अनिवार्य है जो स्वदेशी दृष्टिकोणों का सम्मान और एकीकरण करते हैं। शिक्षा, आर्थिक सहायता और सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से गोंडों को सशक्त बनाकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि तेजी से बदलती दुनिया में उनकी विशिष्ट पहचान बढ़ती रहे। इसके साथ ही, यह भी आवश्यक है कि नीतिगत पहलों में गोंड समुदाय की भागीदारी को प्राथमिकता दी जाए ताकि उनके दृष्टिकोण, आवश्यकताओं और पारंपरिक ज्ञान का समुचित सम्मान हो। सतत विकास और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समुदाय-आधारित मॉडल ही एक प्रभावी और संवेदनशील रास्ता प्रदान कर सकते हैं।

9. संदर्भ:

1. अब्बी, ए (2006)। *अंडमान द्वीप समूह की लुप्तप्राय भाषाएँ*। लिनकॉम यूरोपा।
2. बेतेइल, ए (1998)। *स्वदेशी लोगों का विचार*। वर्तमान नृविज्ञान, 39 (2), 187-191।
3. भारद्वाज, आर. (2020)। मध्य भारत में आदिवासी समाज और रिश्तेदारी पैटर्न। नई दिल्ली: ट्राइबल स्टडीज प्रेस।
4. दास, ए., और मीना, आर. (2020)। "गोंड समुदायों में विस्थापन और आर्थिक बदलाव: एक जिला स्तरीय अध्ययन। जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट स्टडीज, 18 (3), 112-127।
5. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक। (2023). "आदिवासी किसानों के बीच हाशिए और बाजार की कमजोरियां। ईपीडब्ल्यू, वॉल्यूम 58, अंक 6।
6. कुमार, पी. (2021)। मध्य भारत की जनजातियों के बीच धार्मिक समन्वयवाद। भोपाल: संस्कृति और विरासत प्रकाशन।
7. मीना, आर. (2019)। *रानी दुर्गवती: गोंड रानी जो मुगलों से लड़ते हुए शहीद हो गए*। जनजातीय ऐतिहासिक अध्ययन जर्नल।

8. जनजातीय कार्य मंत्रालय। (2022). जनजातीय शिक्षा पहल पर वार्षिक रिपोर्ट। भारत सरकार।
9. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन। जनजातीय स्वास्थ्य अवसंरचना: मध्य प्रदेश में अंतराल और रणनीतियाँ। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय।
10. एनएसएसओ (2011)। *भारत में सामाजिक समूहों के बीच रोजगार और बेरोजगारी की स्थिति*। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार।
11. योजना आयोग की रिपोर्ट। (2022). मध्य प्रदेश में आदिम जाति कल्याण योजनाओं का मूल्यांकन। भारत सरकार। राव, एस., और तिवारी, ए. (2022)। "गोंडों के बीच सांस्कृतिक परिवर्तन और पहचान का संकट। इंडियन जर्नल ऑफ एंथ्रोपोलॉजी, 26 (1), 77-94.एन शाह, जी (2010)। *भारत में सामाजिक आंदोलन: साहित्य की समीक्षा*। सेज प्रकाशन।
12. शर्मा, डी. (2021)। गोंडवाना और भारत की जनजातीय विरासत। दिल्ली: हेरिटेज बुक्स।
13. सिंह, एम., और पटेल, आर. (2022)। "गोंड कला में दृश्य कहानी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्राइबल आर्ट्स एंड कल्चर, 7 (2), 54-68।
14. सिंह, पी. और शर्मा, एम. (2020)। *गोंडवाना साम्राज्य: मध्य भारत में जनजातीय शासन और सांस्कृतिक योगदान*। इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, 47(2), 123-145.
15. वर्मा, एल. (2019)। जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं में महिलाएं: गोंडों का एक केस स्टडी। इंदौर: सोशल इक्विटी प्रेस।
16. वर्मा, आरसी (2021)। *भारत की जनजातीय विरासत: अतीत और वर्तमान*। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
17. वर्मा, आरसी (1990)। *युगों से भारतीय जनजातियाँ*। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

18. ज़ाक्सा, वी. (2001)। *सुरक्षात्मक भेदभाव: अनुसूचित जनजातियां अनुसूचित जातियों से पीछे क्यों हैं*। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 36 (29), 2765-2772।

19. ज़ाक्सा, वी. (2008). *राज्य, समाज और जनजातियाँ: उत्तर-औपनिवेशिक भारत में मुद्दे*। पियर्सन एजुकेशन इंडिया।